शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

पर्यावरण चेतना के विकास में लोक-संस्कृति पर आधारित ललित-निबंधों की भूमिका

गजेन्द्र भारद्वाज (शोधार्थी हिन्दी)
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

प्रकृति और साहित्य के संबंध को झुठलाया नहीं जा सकता। हमारी प्रकृति और समाज का एक-दूसरे से घनिष्ठ एवं अन्योन्याश्रित संबंध है जो एक-दूसरे का पूरक भी है इसीलिए प्रकृति का प्रभाव मानव पर पड़ता है और समाज की घटनाएँ भी प्रकृति पर प्रभाव डालती हैं। समाज और प्रकृति का जुड़ाव हमारे समाज की रीढ़ समझे जाने वाली लोक-संस्कृति में भी मिलता है हिन्दी साहित्य के ललित-निबंधों में विशेषकर लोक-सांस्कृतिक ललित-निबंधों में यह चित्रण व्यापक रूप से पाया जाता है।प्रस्तुत शोध पत्र में इस पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

निबंधों में पर्यावरण

हमारी संस्कृति के लोकाचार, त्यौहार, लोक-विश्वास, आस्थाएँ आदि अधिकांशतः प्रकृति से जुड़ी हैं और उन्हें हमारे हिन्दी साहित्य के ललित-निबंधकारों ने अपने ललित-निबंधों में उद्गारों के रूप में संजोया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से लेकर कुबेरनाथ राय और वर्तमान में उमाशंकर दीक्षित तक सभी निबंधकारों ने अपने निबंधों में प्रकृति के प्रति न केवल अपना राग स्थापित किया है अपितु उसके दोहन के प्रति चिंता करते हुए उसकी सुरक्षा के उपाय भी बताए हैं। आज जिस गंगा नदी के प्रदूषण को दूर करने के लिए दो हजार करोड़ रुपये भी कम पड़ रहे हैं उसी नदी को माता मानते हुए कुबेरनाथ राय ने 'उत्तरकुरू' निबंध में लिखा था "नदी माता ! पतितपावनी ! विमल वारि का शांत धीरे विस्तार ! ध्यान-तंरगायित रूप कही कोई विकलता नहीं, उद्गमता नहीं, कोई उन्मत्ता या अवदमन नहीं ! यह नदी एक धीरा नायिका है। पर है नायिका महाताप-सी होते हुए भी अंग-प्रत्यंग से नायिका है। हमारी भारतीय जाति की परम स्मृति में युगांतर से प्रवाहमान एक बिंब।" प्रकृति के दोहन के भंयकर परिणामों की ओर ध्यान दिलाते हुए कुबेरनाथ राय ने 'खौलती नदी', 'नाग और किशोर' निबंधों में लिखा है कि राजनीति और नौकरशाही का अपवित्र गठबंधन इस देश को उसी रास्ते पर बड़ी ही सूक्ष्म धूर्तता के साथ ढकेलते हुए ले जा रहा है। कुबेरनाथ राय पूरे भारत ही नही बल्कि पश्चिमी जगत् को शामिल करते हुए वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहते हैं कि - आज हमारे लिये जरूरी है कि हम अपनी कामना या इच्छा शक्ति को सही ढंग प्रच्छालित और संतुलित कर लें। उतना मानसिक अधःपतन की मौज लेने का सौहार हमारे पास नहीं। आज संपूर्ण पुराना एशिया और विशेष रूप से भारतवर्ष एक

नए द्वापर से गुजर रहा है। विश्व स्तर पर भी स्थिति नाक्षत्रिक समर और आणविक युध्द के दुःस्वपनों के मध्य उसी बिंदु की ओर खिंचती जा रही है। सारी मानवीय संस्कृति ही अपस्मार से पीडित है। जल-थल-अन्न सर्वत्र प्रदूषण है क्या अब मीठा जल, निर्मल स्वादिष्ट जल, स्वाभाविक जल कहीं भी शेष नहीं रह जाएगा। इतना ही नही वे पर्यावरण के स्वस्थ्य होने के लिए प्रार्थना भी करते हैं - ''हमारा अन्न, हमारा जल, हमारी पवन निर्मल निरूज बनी रहें। और सबसे बढकर हमारी साधना पुनः स्वच्छ और उच्चगामी हो, हमारे शब्द गर्म रोटी की तरह सुगंधित हों।

आंचलिकता से गहरा संबंध रखने वाले ललित निबंधकार विवेकीराय ने अपने ललित निबंधों 'किसानों का देश', 'गांवों की दुनिया', 'त्रिधारा', 'फिर वैतलवा डाल पर', 'गॅवई गंध गुलाब' आदि में पर्यावरण के प्रति अपना गहन चिंतन व्यक्त किया है और मूल स्वर आशावादी रखते हुए खुद को दिलासा दी है कि ''चारों ओर अंधेरा.....लेकिन अंधेरा क्यों। आज तो अष्टमी है। सिर के ऊपर चांद का चमकता टुकड़ा आसमान में झूल रहा है। अब आसमान की ओर देखता हूँ, तब ऐसा लगता है असंख्य छिटके और जगमगाते तारों के बीच कोई तारा अवश्य ही धीमे-धीमे किसी न किसी ओर खिसकता नजर आएगा।

पंडित विद्यानिवास मिश्र ने अपने ललित निबंधों में आचार्य द्विवेदी की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए लोक-सांस्कृतिक पक्ष को और भी विकसित किया है, जिसमें 'छितवन की छाँह', 'हल्दी दूब', 'कदम्ब की फूली डाल', 'तुम चंदन हम पानी', 'बसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नही', 'गाँव का मन' आदि ललित निबंध संग्रहों के निबंधों में प्रकृति के मनोरम रूप की साधना की है। वर्णात्मक एवं भावात्मक शैली का सहारा लेकर जहां एक ओर कई निबंधकारों ने त्योहारों आदि के वर्णन में प्रकृति पर्यावरण को अपना विषय बनाया है वहीं दूसरी ओर आलोचनात्मक शैली का सहारा लेकर पर्यारण को दूषित करने वाले क्रिया-कलापों की आलोचना भी की है और विचारात्मक षैली के द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर विचार किया है। निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है कि यदि किसी को अपने देश से प्रेम है तो उसे अपने देश के मनुष्य, पशु-पक्षी, लता, गुल्म, पेड़, पत्ते, वन, पर्वत, नदी, निर्झर सबसे प्रेम होगा सबको वह चाह भरी दृष्टि से देखेगा। निस्संदेह आचार्य षुक्ल यही कहना चाहते हैं कि प्रकृति प्रेम अर्थात् पर्यावरण प्रेम से ही देश प्रेम होता है। देशानुरागी मन पर्यावरण के वैभव को देखकर झूम उठता है भारतीय वांड्मय इसका साक्षात् प्रमाण है । न केवल निबंधकारों ने बल्कि कवियों, कथाकारों, नाटककारों और निबंधकारों प्रकृति सौदर्य के प्रति विशेष लगाव का परिचय दिया है। एवं विभिन्न रूपों में पर्यावरण का वर्णन किया है और पर्यावरण संरक्षण के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए उसके उपाय भी बताए हैं। अतः यह कहना सर्वदा सार्थक ही है कि पर्यावरण चेतना के विकास में विभिन्न साहित्यकारों एवं उनके साहित्य की महती भूमिका रही है जिनमें ललित-निबंधकारों के लोक-संस्कृति पर आधारित ललित-निबंधों का भी महत्वपूर्ण योगदान हैं।